MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
विद्यावार्ता™
Special Issue, October 2019

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड
तथा हिंदी विभाग और IQAC
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय
बसमतनगर, जि.हिंगोली
Accredited by NAAC B+Grade

के संयुक्त तत्वावधान
आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना

संपादक
डॉ.सुभाष क्षीरसागर
डॉ.रेविता कावले
डॉ.शेख रजिया शहेनाज

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
04 Oct. 2019

Vidyawarta™
International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Chief Editor **Dr. Gholap B. G.**

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary.

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT FACTOR 6.021 iijif

Cosmos IMPACT FACTOR 5.234

Govt. of India, Trade Marks Registry Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

विद्यावार्ता : Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 6.021(IIJIF)

96) हिंदी कविता में नारी चेतना
प्रा. भेंडेकर एन.एस., गंगाखेड ||244

97) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड, परभणी ||246

98) प्रतिरोध के स्वर और कात्यायनी की कविता
कदम गजानन साहेबराव, वर्धा ||248

99) समकालीन कविता के कवि-रघुवीर सहाय
प्रा. मंगल संभाजीराव खुपसे, हिंगोली ||251

100) समकालीन हिन्दी दलित काव्य में स्त्री चेतना
डॉ. बालाजी सोपुरे, कर्नाटक ||253

101) समकालीन हिंदी कविता में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. संजय गडपायले, परभणी ||255

102) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. संग्राम सोपानराव गायकवाड, लातूर ||257

103) समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. अशोक विश्वनाथ अंधारे, नांदेड ||259

104) अनामिका की कविताओं में व्यक्त स्त्री संवेदना
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर ||260

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

समाज को अभिव्यक्ति कर रहे हैं। उनकी कविताएं पूरे वंचित समुदाय के यथार्थ की गाथा है। लेखिका आदिवासी शोषक जातों, आदिवासी-मजदूर स्त्रियों और जल, जंगल, जमीन के लिए लड़ने की कविताएं लिख रही है तो राजनीतिक व्यवस्था और भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था पर भी लिख रही है। 'कुर्सी' कविता में लेखिका ने लिखा है -

"कुर्सी है तभी देश चलता है और तभी चलती है देश की को मेहनतकशी कुर्सी है तो है जिसके बल में घूमती है देश की राजनीति और उसके प्रभाव से निरन्तर-उजड़ता है देश का आदमी।" 'झुनझुना', 'कुत्ते की तरह होते', 'स्वीकारी पिता के नाम पत्र', 'तुम्हारे एकान्त मेरे से पहले सोचना पड़ेगा हमें', 'अपने शहर में', 'अपने बीच रहते', 'आपके लिए', शीर्षक जैसी कविताओं में लेखिका ने आदिवासी समुदाय को लूटने-खसोटने वाले, ठेकेदारों, दलालों, प्रशासनिक तंत्र और कारपोरेट लूट खसोट के तंत्र को उघाड़ा है।[9]

स्त्री किसी भी जाति-धर्म-वर्ग की क्यों न हो। हर वर्ग की स्त्री अपने मुक्ति का मार्ग तलाश रही है। पितृसत्तात्मक समाज द्वारा आज भी पुरुष की सत्ता और वर्चस्व को बनाए रखने की पुरजोर कोशिशें की जा रही है। लिंग-भेद की परंपरा को बनाए रखने की शिक्षा आज भी दी जा रही है। इस तरह कभी न खत्म होने वाली स्त्री शोषण की परंपरा आज भी चल रही है और स्त्रियाँ इस चली आ रही परंपरा को सिरे से खारिज करना चाहती हैं। आज स्त्री कविता में जहाँ शोषण के प्रकारों को बता रही है, वहीं उस शोषण से मुक्त होने के उपाय भी बता रही है और स्त्री मुक्ति के स्वप्न को साकार कर रही है।

संदर्भ :

१. दलित निर्वाचित कविताएँ, संपा. कँवल भारती, पृ. २०३
२. वही, पृ. २०३
३. वही, पृ. १६३
४. स्त्री मुक्ति के प्रश्न, देवेन्द्र इस्सर, संवाद प्रकाशन, मेरठ प्रथम संस्करण २००९, पृ. ९८
५. दलित निर्वाचित कविताएँ, संपा. कँवल भारती, पृ. १४३
६. वही, पृ. ७५
७. वही, पृ. ४३
८. वही, पृ. ४३
९. वही, पृ. ४४

❑❑❑

96

हिंदी कविता में नारी चेतना

प्रा. [illegible]
हिंदी विभाग, कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, [illegible]

"स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि बनायी जाती है।" सिमोन द बोउवार की यह पंक्ति स्त्री की सच्चाई का बयान करती है। मूलतः लिंग भेद की दृष्टि से देखा जाये तो स्त्री तथा पुरुष यह दो भेद पाए जाते हैं। सामाजिक रूप से भी इन दोनों में कुछ भिन्नता पायी जाती है। स्त्री सृजन-संस्कृति तो पुरुष सृष्टि का संरक्षक। अनेक साहित्यकारों ने स्त्री को सृजन के स्वरूप, आकर्षक रूप अपने साहित्य के द्वारा उतारे हैं। दूसरा यह कि इन दोनों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण प्राकृतिक ही है। पर ऐसा होते हुए भी स्त्री बार बार पुरुषी अत्याचार का शिकार बनती आयी है। इससे सिद्ध मूलतः हमारी समाज व्यवस्था दिखाई देती है। जहाँ पर स्त्री को पुरुषों की तुलना में दुय्यम स्थान दिया गया है। तो दूसरी ओर स्त्री को 'अबला' कहकर कमजोर बनाने का प्रयास भी किया गया है। ऐसी विषम स्थिति में स्त्री-पुरुष समानता प्रस्थापित होना एक प्रश्न उपस्थित करता है।

समानता शब्द में ही निहित है उसका अर्थ, किंतु इस शब्द तथा उसके अर्थ की सार्थकता क्या वर्तमान में हम देख पाते हैं? क्या समाज में समानता प्रस्थापित हुयी है? ऊँच-नीच के भेद-भावों के साथ क्या धर्म, जातिगत भेदभाव तथा स्त्री-पुरुषों में समानता प्रस्थापित हुयी है? वास्तव जब हमारे सम्मुख ऐसे प्रश्न आते हैं तो इनके उत्तर नकारार्थी ही प्राप्त होते हैं। फिर प्रश्न उपस्थित हो जाता है कि, हम जिस समानता का ढिंढोरा पीटते आ रहे हैं, वह कहाँ दबकर रह गयी?

भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री को पवित्र तथा देवतुल्य माना गया है। प्राचीन साहित्य में तो स्त्री को देवी का स्थान दिया गया है और वर्तमान में...? स्त्री की दशा-दिशा पर विचार किया जाये तो, एक भयावह वास्तविकता दिखाई देती है। जहाँ पर स्त्री की दीन-हीन दशा को देख किसी भी सहृदय का मन द्रवित हो उठता है। यह वही स्त्री है, जिसकी हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है, वह भी विविध रूपों में। हमें आँचल में छिपाने वाली माँ, दिलोजान से ख्याल रखने वाली बहन, प्रेरणा का अजस्र स्रोत बनी प्रेमिका, सुख-दुख की

में साथ देने वाली पत्नी आदि कई ऐसे रूप है, जिनसे हम हमेशा घिरे रहते हैं। पर ऐसा होते हुये भी स्त्रीयों पर हो रहें अन्याय-अत्याचारों को दास्ताँ कभी थमने का नाम नहीं लेती। पुरूषी मानसिकता ने उसे चुल्हे-चौके तक ही उसके अस्तित्व को सीमित कर दिया है। यह उसका सिमटा हुआ अस्तित्व और उसकी विवशता को व्यक्त करते हुये अंकिता जैन लिखती है-

"स्त्रियाँ जो पढना चाहती है राजनीति
और अर्थशास्त्र में
मगर सिमट जाती है
सुशील मसालों से पेट
सुंदर आलेपों से तन,
और सभ्य आचारन से
घरों को भरने की किताबों में।"[१]

हमारी समाज व्यवस्था में और पुरूष प्रधान संस्कृति के अस्तित्व ने स्त्री को हमेशा दासी तथा भोग की वस्तु समझा है। ऐसी स्थिति में इस सभ्याता की दकियानुसी सोच एक स्त्री को अपने जिवन को विवशता के जिने के लिये मजबूर कर देती है। मानविय धरातल पर होना यह चाहिये कि, उसे पुरूषों के बराबर सम्मान प्राप्त होना आवश्यक है किंतु वास्तव में इन्हीं पुरूषों द्वारा वह प्रताडीत होती हुई दिखाई देती है। इस संदर्भ में अंकिता जैन की निम्न पंक्तियाँ सराहनीय है-

"वो बिकती है बाजारों में
लुट जाए घर-बारों में
वो छलनी कपडे से लाज बचाती
स्त्री ही तो है।"[२]

वर्तमान में प्रशासकीय धरातल पर स्त्रीयों के सामाजिक सतर को सुधारने के लिये अनेक प्रयास तथा कानून की व्यवस्था व्यव्हरत दिखाई देती है। परंतु वास्तविकता यह है कि, यह सारे प्रयास कागजों से शुरू होकर कागजों तक ही सीमित है। क्योंकि स्त्रीयों के प्रति देखने की हमारे समाज की संकुचित मानसिकता एवं दृष्टिकोन स्त्री स्वतंत्रता के नाम के खोकले नारे लगाते हुये स्त्री को पुरूष दासता को स्वीकारने के लिये बाध्य करते हुये दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में शैलेंद्र चौहान लिखते हैं-

"मदर टेरेसा को आदर्श मानती हुई
हॉलीवुड से बॉलीवुड तक
पुरूषों की अपेक्षा आधे दामों में
अभिनीत करती है खुशी से
पुरूष-दासता की अनंत भूमिकाएँ।"[३]

आज स्त्रीयों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में हुये अगाध परिवर्तनों के साथ-साथ स्त्रीयों की स्थितियों में भी समय सापेक्षता की दृष्टि से अमुलाग्र परिवर्तन दिखाई देता है। आज स्त्रीयाँ शिक्षार्जन कर अपने अस्तित्व को सिध्द करते हुये पुरूषी मानसीकता की बेडियों को तोडती हुई नजर आ रही है। आज समाज के हर क्षेत्र में, राजनीति, समाजकारन, नौकरी तथा व्यवसायों में हर जगह पर स्त्री ने अपने कदम जमाकर यह सिध्द कर दिखाया है कि वह किसी भी मात्रा में पुरूषों की तुलना में ही कार्यक्षम है। इतना ही नहीं बल्कि आज तो स्त्री मंगल तथा चाँद पर भी जाती हुयी नजर आती है। यह एक तरह से सराहनीय बात है। इसका कारन यह है कि, समाज के पारंपरिक दृष्टिकोन को धुतकार कर स्त्री अपनी अस्मिता को सिध्द करने के लिये प्रवल आस्था और विश्वास के साथ जिवन से संघर्ष करने लगी है। अंजु शर्मा को निम्न पंक्तियाँ इसी आस्था को व्यक्त करती है-

"क्यो नहीं मानता
कि आज किसी शाप की कामना
नहीं है मुझे
कामनाओं के पेराहन के
कोन को
गांठ लगा ली है
समझदारी की
जगा लिया है अपनी चेतना को
हाँ ये तय है
में अहिल्या नहीं बनूंगी!"[४]

अत: स्पष्ट है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को जीवन के हर क्षेत्र में सिध्द कर रहीं है। परंतु अब वह यह जान चुकी है कि, एक पुरूष का विकास केवल पुरूष तक सिमित है परंतु एक स्त्री का विकास संपुर्ण परिवार के साथ-साथ भविष्य की पिढियों के लिये भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिये स्त्री अपनी अस्तीत्व सिध्दता के पश्चात अपने भविष्य के पिढियों को भी जागृत करते एवं सक्षम बनाते हुये नजर आती है। इस संदर्भ में अंजू शर्मा कहती है-

"आज बिना किसी हिचक कहना चाहती हूँ
संस्कार और रूढियों के छाते तले
जब भी घुटने लगे तुम्हारी सांस
मैं मुक्त कर दूंगी तुम्हें उन बेडियों से
फेंक देना उस छाते को जिसके नीचे
रह पाओगी तुम या तुम्हारा सुकून
मेरी बेटी....।"[५]

अतः यह स्पष्ट है कि, हिंदी साहित्य में अन्य विविध विमर्शों को तरह नारी विमर्श को भी यथार्थता के साथ अभिव्यक्ति मिली हुयी दिखाई देती है। इसमें नारी के प्रति देखने का पारंपारिक दृष्टिकोन, संकुचित मानसिकता, उसकी विवशता एवं असाहयता, भोगवादिता, रूढि एवं परंपरा की शिकार तथा विद्रोह, दासता की बेडियों से ग्रस्त आदि के साथ-साथ उसके जीवन में आये समय सापेक्ष परिवर्तन, शिक्षा-दिक्षा अर्जनोंपरांत उसके जीवन संघर्ष तथा अस्तित्व सिध्दता को हिंदी कविता प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करती हुयी दिखाई देती है।

१. http://kavitakosh.org/kk/ कौन हैं ये स्त्रियाँ- अंकिता जैन
२. http://kavitakosh.org/kk/ गरीब स्त्री- अंकिता जैन
३. http://kavitakosh.org/kk/ स्त्री प्रश्न- शैलेंद्र चौहान
४. http://kavitakosh.org/kk/मैं अहिल्या नहीं बनूंगी!- अंजू शर्मा
५. http://kavitakosh.org/kk/बेटी के लिये- अंजू शर्मा

❑❑❑

97

समकालीन हिंदी काव्य साहित्य में स्त्री चेतना

डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड
सहयोगी प्राध्यापक, शोध निदेशक,
एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, श्री. शिवाजी महाविद्यालय, परभणी

****

भारतीय समाज ही नहीं, पूरा विश्व समुदाय अनेकानेक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। नारी की स्थिति एवं मानसिकता में आए बदलाव ने पिछले हजारों वर्षो से चली आ रही पुरूषसत्तात्मक समाज-व्यवस्था की जडें हिला दी है। निसंदेह स्त्री काव्य साहित्य लेखन एक नारीवादी लेखन के रूप में पिछले बीस-पच्चीस वर्षो से स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश में है। महिलाओं व्दारा महिलाओं के बारे में लिखने की परम्परा काफी पुरानी है। हिंदी साहित्य की बात की जाए तो मीरा-महादेवी की विरासत से जुडकर महिला लेखन का एक स्वतंत्र ढाँचा निर्मित होता दिखाई दे रहा है। मीरा एवं महादेवी की परम्परा से जुडकर भारतीय नारी का जातीय साहित्य गौरवान्वित हो सकता है। साहित्यिक धारातल पर स्त्री लेखन के अलग अस्तित्व को स्वीकारने के मूल में, एक साहित्यकार के रूप में स्त्रियों व्दारा जीवन के यथार्थ अनुभवों से उत्पन्न साझेदारी समझदारी की विशिष्टता का होना है। पिछले बीस-पच्चीस वर्षोमें राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक नैतिक और सांस्कृतिक सोच में तेजी से बदलाव हुआ है। भ्रष्टाचार का बोलबाला, असंवेदनशील नौकरशाही, तानाशाही- लोकतंत्र, उपभोक्तावाद-बाजारवाद का जोर, संचार माध्यमों का विस्तार, शहरों की ओर पलायन, बेरोजगारी की समस्या, महँगाई की मार आदि ऐसे कारण है जिनकी वजह से आम जनता के जीवन लक्ष्य में भटकाव की स्थिती आ गई है। तत्कालिक सुख, दिशाहीनता, हिंसा, आतंक, चाटूकारिता, निराशा, अकेलापन, विवशता, एकरसता, अस्थिरता आदि विसंगतियों ने समाज और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। ये समस्याएँ आम जनता की होने के कारण महिलाओं की भी है। इन सबके अतिरिक्त महिला होने के कारण कुछ और मोर्चो पर इन्हें कठिनाईयों का सामना करना पडता है। क्योंकि पुरूष से एक दर्जे नीचे का मनुष्य मानकर इनके साथ व्यवहार किया जाता है। लैंगिक भेदभाव, कुपोषण, यौन उत्पीडन, बलात्कार, दहेज उत्पादीन, वैधव्यता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व का अभाव, उत्तराधिकार की समस्या, अशिक्षा, निरक्षरता, विस्थापन की पीडा, मृत्यू दर की अधिकता आदि अनेक परम्परागत और आधुनिक जीवन की समस्याएँ है, जिनका शिकार होकर स्त्री जाती घूटती रही है।